निर्णयन
अवधारणा, प्रक्रिया तथा नियन्त्रित तर्कशक्ति

डा0 नज़ाकत हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर–वाणिज्य
राजकीय महाविद्यालय
भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्य के लिये है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी ओर के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगें ओर इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिये ही करेंगें। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

निर्णयन दो या अधिक सम्भवित विकल्पों में से कुछ सिद्धान्तों के आधार पर एक का चयन करना है।

जार्ज0 आर0 टैरी

निर्णयन की विशेषताएं:

1. निर्णयन प्रबन्ध का प्रमुख कार्य है।
2. निर्णयन एक प्रक्रिया है।
3. निर्णयन प्रबन्ध के सभी कार्यो में लागू होता है।
4. निर्णयन प्रबन्ध के सभी स्तरों पर किया जाता है।
5. निर्णयन के ढंग भिन्न भिन्न हो सकते है।

निर्णयन का महत्व

“प्रबन्धक जो भी करता है, निर्णयन के द्वारा ही करता है।” पीटर एफ0 ड्रकर

1. नियोजन में उपयोगी
2. अन्य प्रबन्धकीय कार्यों में उपयोगी
3. विभागीय प्रबन्ध में उपयोगी
4. प्रबन्धकीय क्षमता में वृद्धि

निर्णयन के सिद्धान्त

1. उर्पयुक्त परिभाषा का सिद्धान्त
2. ठोस तथ्यों पर आधारित
3. पहचान का सिद्धान्त
4. जोखिम व अनिश्चितता का सिद्धान्त

निर्णयों के प्रकार

1. व्यक्तिगत एंव पेशेवर निर्णय
2. नैत्यिक एंव अनैत्यिक निर्णय
3. साधारण एंव महत्वपूर्ण निर्णय
4. कार्य{मिक एंव अकार्य{मिक निर्णय
5. नीति, प्रशासकीय एंव कार्यकारी निर्णय
6. एकाकी एंव सामूहिक निर्णय

निर्णयन प्रक्रिया

1. समस्या का निदान
2. सम्भवित विकल्पों की खोज
3. विकल्पों का मूल्यांकन
4. एक विकल्प का चुनाव
5. निर्णय का क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन

निर्णयन की तकनीकें

1. स्वयं के अनुभव पर पुर्नविचार
2. अन्य फर्मों की विधियों की जांच
3. ब्रेन स्टोर्मिंग विधिः आठ व्यक्तियों का समूह जिसमें फर्म के अधिकारी तथा बाहय विषय विशेषज्ञ भी हो सकते है उनके सामने समस्या प्रस्तुत की जाती है। समूह का प्रत्येक व्यक्ति अपनी समझ के आधार पर निर्णय सुझााता है। जब सभी सुझााव आ जाते है तब सभी सदस्य अपने अपने विकल्पों के साथ साथ दूसरे सदस्यों के बताये हुए विकल्पों पर गुण दोष के आधार पर विचार विमर्श करते हुए अन्तिम निर्णय तक पहुंचते है।
4. सांकेतिक समूहीकरण विधिः इस विधि में समूह के सदस्य परस्पर विचार विमर्श बहुत ही कम करते है। सभी अपने अपने विवेक के अनुसार निर्णयों के विकल्प सुझााते है। उनमें से सर्वोत्तम विकल्प का चयन कर लिया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. व्यावसायिक प्रबन्ध के सिद्वान्त, डा0 आर. सी. गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा